ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 6,June 2023 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

बीकानेर जिले में दृष्टि बाधित और श्रवण बाधित छात्रों के बीच आत्म-अवधारणा और समायोजन पैटर्न का तुलनात्मक विश्लेषण

सुमन चौधरी
शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर, राजस्थान
शोध पर्यवेक्षक
प्रोफेसर (डॉ.) राजेन्द्र कुमार गोदारा
शिक्षा विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर, राजस्थान

सार
समाज में एक ऐसा वर्ग भी पाया जाता है जो अपनी विशेष स्थिति के कारण उपेक्षा का पात्र बना हुआ है । यह वर्ग है विकलांग लोगों का वर्ग जो हमारी सहानुभूति का नहीं बल्कि ऐसी सहायता का अभिलाषी है जो उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न कर सके और प्रकृति द्वारा दी गई विकलांगता से लड़ने में अपने आप को सक्षम बना सकें । शिक्षा जीवन में सुनियोजित एवं अनियोजित अनुभवों से युक्त एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है जो कि बच्चों एवं वयस्कों को समान रूप से विकसित करती है तथा उस समाज व संस्कृति का ज्ञान प्रदान करती है जिसमें वे निवास करते हैं ।
मुख्य शब्द: सांस्कृतिक, विद्यार्थियों, शैक्षिक

प्रस्तावना :
शिक्षा जीवन में सुनियोजित एवं अनियोजित अनुभवों से युक्त एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है जो कि बच्चों एवं वयस्कों को समान रूप से विकसित करती है तथा उस समाज व संस्कृति का ज्ञान प्रदान करती है जिसमें वे निवास करते हैं । इसमें जीवन के सभी स्तर के अनुभव जो शैशवावस्था से प्रौढ़ावस्था तक प्राप्त करते हैं , वे सम्मिलित होते हैं । ड्रेवर के अनुसार - शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालकों के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहारों को एक निश्चित दिशा तथा रूप प्रदान किया जाता है । मैकेन्जी के अनुसार - व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन पर्यंत चलती है तथा जीवन का प्रत्येक अनुभव उसके भंडार में वृद्धि करता है । शिक्षा का अर्थ है समाज एवं संस्कृति का अनुकूलन । जीवन की सभी घटनाओं और अनुकूलन के समूह का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति अधिगम एवं समस्या / समाधान के अनुभव की अद्वितीय इकाई है जिनके द्वारा समाज एवं इसमें निहित घटनाओं के बारे में हमारे समक्ष उत्पन्न होती है । विश्व की घटनाओं को एकत्रित कर अनुभव इकट्ठा करती है । फिर भी यदि, हम अपना ध्यान पूरे समय बच्चे के विद्यालय पूर्व अधिगम एवं अनुदेशन से क्षेत्रीय शिक्षा तक में ही सीमित कर देते हैं तो, यह केंद्र या राज्य प्राधिकरण द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम में समाहित हो सकता है ।
समाज में एक ऐसा वर्ग भी पाया जाता है जो अपनी विशेष स्थिति के कारण उपेक्षा का पात्र बना हुआ है । यह वर्ग है विकलांग लोगों का वर्ग जो हमारी सहानुभूति का नहीं बल्कि ऐसी सहायता का अभिलाषी है जो उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न कर सके और प्रकृति द्वारा दी गई विकलांगता से लड़ने में अपने आप को सक्षम बना सकें ।
संपूर्ण सृष्टि में मानव प्रकृति की अनमोल कृति है । मानव अपनी सूझ-बूझ, विवेक एवं सद्ज्ञान से

निरंतर अग्रसर होने का दावा करता है, किंतु कुछ ऐसे लोग भी हैं जो शारीरिक व मानसिक विकारों के कारण समाज, परिवार और अपने आसपास से अलग-थलग पड़े हुए हैं । समाज इन्हें ही विकलांग कहता है । विकलांगता सबसे अनायास ही सहानुभूति का भाव प्रकट होता है, किंतु क्या सहानुभूति का भाव प्रकट करना पर्याप्त है ? यद्यपि आज विभिन्न उपायों द्वारा विकलांगता पूर्ण रूप से समाप्त करना संभव नहीं है, फिर भी नवीन उपायों एवं आधुनिक चिकित्सा पद्धति द्वारा विकलांगता कम की जा सकती है ।

शोध के उद्देश्य

1. दृष्टि बाधित छात्रों और छात्राओं के मध्य समायोजन के सन्दर्भ में अंतर का पता लगाना।
2. दृष्टि बाधित छात्रों और छात्राओं के मध्य आत्म-अवधारणा के सन्दर्भ में अंतर का पता लगाना ।

साहित्य का अध्ययन

शर्मा (1981) ने अपने अध्ययन बदलता सामाजिक ढांचा और विकलांगता की स्थिति में निष्कर्ष निकाला कि जब विकलांग बच्चे सामाजिक वातावरण की मांग के अनुरूप रहना चाहते हैं तो उनके सामने कई समस्याएं आती हैं । उनकी समस्याएं केवल अयोग्यता के कारण नहीं होती बल्कि समायोजन के कारण भी होती हैं ।

मोहसिन एवं गांधी (1982) ने अपने अध्ययन शारीरिक विकलांगता और सरकार के आधार पर विकलांग बच्चों की समस्याओं का एवं सरकारी योजनाओं का अध्ययन किया । अध्ययन में पाया गया कि सरकारी की योजनाएं उन विकलांग बच्चों तक नहीं पहुंच पा रही हैं, जहां वे पहुंचनी चाहिए ।

लता (1985) ने सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के सामाजिक, संवेगात्मक और शैक्षिक समायोजन पर पैतृक अभिवृद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि समायोजन स्तर पर सामान्य एवं विकलांग बच्चों में सार्थक अंतर पाया गया । सामान्य लड़कों और विकलांग लड़कियों ने सामान्य लड़कियों और विकलांग लड़कों की तुलना में संवेगात्मक समायोजन अच्छा पाया गया । सामान्य विद्यार्थी विकलांग विद्यार्थियों से सामाजिक समायोजन के क्षेत्र में सार्थक रूप से भिन्न नहीं पाए गए ।

सिंह (1988) ने बिहार के स्कूलों में शारीरिक विकलांगों के लिए समन्वित शैक्षिक सुविधाओं का मूल्यांकन किया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि - सरकार द्वारा प्रदान की गई सुविधाओं का स्कूलों ने सही से लाभ नहीं उठाया और स्कूल में उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उन बच्चों ने नहीं उठाया, जिनके लिए वह सुविधाएं प्राप्त प्रदान की गई थी । इस उद्देश्य के लिए स्कूल में उपलब्ध संसाधनों का सिर्फ 33 प्रतिशत बच्चे उपयोग कर रहे थे । प्रवेश नीति दूषित थी । शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों अपने परिवार के साथ अच्छी तरह समायोजित थे, परंतु अपने सामान्य सहपाठियों के साथ संप्रेषण की कमी थी । स्कूलों ने विकलांग विद्यार्थियों से संबंधित व्यक्तियों के लिए उपलब्ध प्रशिक्षण सुविधाओं का लाभ नहीं उठाया । किसी भी स्कूल में अलग संसाधन कक्ष नहीं था । कुछ स्कूलों द्वारा पुस्तकों तथा स्टेशनरी से संबंधित सुविधाओं का लाभ नहीं उठाया गया ।

बनर्जी (1988) ने पश्चिम बंगाल के माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले नेत्रहीन विद्यार्थियों के समायोजन संबंधी समस्याओं का अध्ययन किया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ की दृष्टि विकलांग और सामान्य दृष्टि वालों के वितरण के में सार्थक अंतर पाया गया एवं दृष्टि विकलांग वयस्कों का उन की बढ़ती हुई आयु के अनुसार परिवेश में समायोजन भिन्न-भिन्न था।

चेनगप्पा श्यामला (1989) ने सेरेब्रल पाल्सी से ग्रसित बच्चों की भाषा संप्रेषण की समस्याओं का अध्ययन किया तथा इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि सेरेब्रल पाल्सी से ग्रसित बच्चों में बहुत

सारी कमियां पाई गई । डायथिरिया, कम बुद्धि लब्धि, भाषा विकास में देरी, कम बोलना, अपूर्ण भाषा प्रारूप, भ्रम की स्थिति आदि बातें सेरेब्रल पाल्सी बच्चों में देखी गई । भाषा संप्रेषण की अपेक्षा भाषा में उनकी पकड़ अधिक अच्छी पाई गई ।

शर्मा, प्रेमलता (1989) ने दिल्ली और हरियाणा के विशेष स्कूलों तथा आई०ई०टी० के स्कूलों में श्रवण बाधित बच्चों के बोलने की क्षमता का अध्ययन किया तथा इस अध्ययन में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आई०ई०टी० स्कूल के श्रवण बाधित बच्चों की भाषा अभीक्षमता विशेष प्रकार के स्कूलों के बच्चों की अपेक्षा अधिक पाई गई । विशेष प्रकार के स्कूलों के श्रवण बाधित बच्चों की बौद्धिक क्षमता आई०ई०टी० स्कूल के बच्चों की अपेक्षा सार्थक रूप से अधिक पाई गई ।

शर्मा (1990) ने उच्च माध्यमिक स्कूलों के शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, शीलगुण, रुचियां और उच्च-सृजनात्मक एवं निम्न-सृजनात्मक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि शारीरिक विकलांग विद्यार्थियों में लड़के लड़कियों से अधिक सृजनात्मक क्षमता वाले पाए गए एवं सृजनात्मक परीक्षण में ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया । रूचि अनुसूची के संबंध में उच्च-सृजनात्मक विकलांग विद्यार्थियों ने कला, विज्ञान और तकनीकी कार्य में उच्च मध्यमान पप्राप्तांक प्राप्त किए, जबकि निम्न-सृजनात्मक समूह ने शिल्प कला में रुचि दिखाई। उच्च-सृजनात्मक और निम्न-सृजनात्मक विकलांग बच्चों के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया ।

मिश्रा (1991) ने सामान्य बच्चों और अधिगम असमर्थ बच्चों के भाषायी लाभ पर घरेलू वातावरण संबंधी चरणों के प्रभाव का अध्ययन किया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि सामान्य बच्चों एवं अधिगम असमर्थ बच्चों के घरेलू वातावरण में अंतर पाया गया ।

पन्त (1991) द्वारा उत्कल विश्वविद्यालय में माता-पिता, अध्यापक एवं समुदाय का विकलांग बालकों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि माता-पिता, अध्यापक एवं समुदाय के विभिन्न लोगों का विभिन्न प्रकार के विकलांगता समूहों के प्रति विभिन्न दृष्टिकोण है ।

लेले वैजयन्ती एवं खंडेलकर आरती (1994) ने बधिर बच्चों की प्राथमिक स्तर पर सीखने से संबंधित समस्याओं का पता लगाने के लिए अध्ययन किया । अध्ययन का केंद्र श्रीमती माई श्रव्य विकास विद्यालय, नासिक रहा ।

सत्येन्द्र कुमार (1995) के अनुसार 40 प्रतिशत केस में जन्म से ही श्रवण बाधिता पाई जाती है । जिनमें से 50 प्रतिशत केस में श्रवण ज्ञानेंद्रियों के कार्य न करने का कारण वंशानुक्रम था एवं 70 प्रतिशत केस में मध्य कर्ण में क्षति के कारण था । रक्त संबंधी विवाह भी प्रमुख कारण था । अध्ययन में यह भी पाया गया कि गर्भ के समय है, पर्याप्त एवं संतुलित आहार टीकाकरण का ना होना, आर० एच० फैक्टर का ऋणात्मक होना, प्रसव के समय होने वाली दुर्घटनाएं, संक्रामक रोग एवं अत्यधिक औषधियां, गर्भकाल के अंतिम तीन माह में गर्भस्थ शिशु की श्रवनेंद्रियों को क्षति पहुंचाती हैं । एक्स-किरणें भी बुरा प्रभाव डालती हैं । वंशानुगत प्राप्त अक्षमता का प्रतिशत अधिकता के साथ देखा गया ।

पाठक, सुवाधा (1996) ने बधिर बच्चों की मानसिक योग्यता एवं उनकी शैक्षिक समस्याओं पर अध्ययन किया । अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष था कि सामान्य बालक और उनके प्राप्तांक बधिर बालकों से उच्च थे ।

सन्ध्या (1996) ने अपने शोध प्राथमिक चक्र की समाप्ति पर सामान्य और बधिर विकलांग बच्चों की उपलब्धि में विकलांग बच्चों की उपलब्धि एवं समस्या पर विचार किया ।

बाला (1998) ने विकलांग और सामान्य बच्चों की मानसिक बनावट एवं सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया और इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि सभी शारीरिक रूप से विकलांग बच्चों की विशेषताएं थी कि वे अल्पभाषी, हठी, निर्लिप्त, गंभीर, कमजोर, परा अहम, आश्रित, बहुत शर्मीले और डरे रहते थे । बधिर बच्चे सुविचारित, भावशून्य, क्रियाशुन्य, बुद्धिमान और नरम दिमाग वाले थे । मूल्यों में बधिर बच्चे कम सैद्धांतिक, आत्म-संतुष्ट, मितव्ययी, धार्मिक, राजनीतिक और ज्यादा सामाजिक थे ।

उषा श्री (2014) ने सामाजिक रूप से वंचित और सामाजिक रूप से गैर-वंचित विद्यार्थियों के बारे में एक अध्ययन किया है जिसमें आत्म अवधारणा और अकादमिक समायोजन के संबंध में पाया गया है । सामाजिक रूप से वंचित उनके शैक्षणिक समायोजन अंक के साथ काफी मतभेद रखते हैं । सामाजिक रूप से अयोग्य लोगों की आत्म अवधारणा अंक गैर-असमान विद्यार्थियों के अंकों से अलग नहीं पाये गए थे ।

शोध की कार्यप्रणाली

अनुसंधान का अर्थ एवं उद्देश्य होता है, किसी समस्या का गहन अध्ययन एवं वैज्ञानिक आधार पर इससे संबंधित तथ्यों को एकत्रित करके किसी व्यापक एवं सार्वजनिक निष्कर्ष तक पहुंचना । डॉ० एम० वर्मा का कथन है कि "अनुसंधान एक बौद्धिक प्रक्रिया है जो नए ज्ञान को प्रकाश में लाती है, पुरानी त्रुटियों एवं भ्रान्त धारणाओं का परिमार्जन करती है तथा व्यवस्थित रूप में वर्तमान ज्ञान कोष में वृद्धि करती है" ।

मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान एक नितांत आवश्यक प्रक्रिया है क्योंकि मनोविज्ञान मुख्य रूप से जीवित प्राणियों से संबंधित विज्ञान है एवं जीवित प्राणियों के मन, विचारों, धारणाओं, आवश्यकताओं, ज्ञान आदि में निरंतर परिवर्तन होता रहता है । उन पर समय एवं परिवर्तनशील परिस्थितियों का प्रभाव हर समय पड़ता है ।

वर्गीकरण एवं विश्लेषण

शोधकर्ता द्वारा निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति तथा परिकल्पनाओं की जांच के लिए संकलित दत्तों का संपादन, वर्गीकरण एवं सारणीयन एक अनिवार्य प्रक्रिया है । जिसके पश्चात ही दत्तों की वैज्ञानिक एवं तर्कयुक्त व्याख्या एवं विश्लेषण संभव है । लघु शोध प्रबंध के लिए निर्धारित परिकल्पनाओं की जांच कर स्पष्ट तथा उद्देश्य परक निष्कर्षों की प्राप्ति के लिए दत्तों को निर्धारित योजना एवं निश्चित विधियों के आधार पर विश्लेषण किया जाना आवश्यक है ।

सामग्री का वर्गीकरण :

विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सामग्री के पश्चात उसका वर्गीकरण करना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है । वर्गीकरण, प्रदत्तों को उनकी समानता के आधार पर वर्गों या समूहों में क्रमबद्ध करने की तथा व्यक्तिगत इकाइयों को विभिन्नताओं के मध्य उपस्थित गुणों की एकात्मकता को प्रकट करने की प्रक्रिया को कहते हैं । सरल शब्दों में, संकलित सामग्री के विभिन्न तत्वों को उनकी व्यक्तिगत विशेषता एवं समानता के आधार पर पृथक-पृथक श्रेणी बंद करने को ही वर्गीकरण कहते हैं । इससे यह भी लाभ है कि इसके द्वारा महत्वपूर्ण प्रदत्त विशेष रूप से प्रकाश में आ जाते हैं ।

तालिका - 1 दृष्टि बाधित छात्र एवं छात्राओं में समायोजन स्तर

दृष्टि बाधित विद्यार्थी न्यादर्श मध्यमान मानक विचलन टी-मान

छात्र 25 38.165.09
6.83*
छात्राएं 25 19.3514.20

df = 48 *सार्थकता 0.05
के स्तर पर महत्वपूर्ण

विश्लेषण - तालिका 1 में 25 दृष्टि बाधित छात्र तथा 25 दृष्टि बाधित छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान को दर्शाया गया है । दृष्टि बाधित छात्र व छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 38.16 एवं 19.35 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.07 एवं 14.02 गणना द्वारा प्राप्त किए गए हैं । इन दोनों के आधार पर गणना द्वारा टी-मान 6.83 प्राप्त हुआ है । 48 (df) स्वतंत्रता के अंश पर गणना द्वारा प्राप्त टी-मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है । अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की गई और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दृष्टि बाधित छात्र और दृष्टि बाधित छात्राओं के मध्य समायोजन के संदर्भ में सार्थक अंतर है । इस संदर्भ में उपर्युक्त तालिका में दिए गए दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्यमानों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि दृष्टि बाधित छात्रों का मध्यमान दृष्टि बाधित छात्राओं के मध्यमान से लगभग दोगुना है । मापनी की विवरणिका के अनुसार प्राप्तांकों में वृद्धि के साथ समायोजन की मात्रा में कमी होती है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि दृष्टि बाधित छात्रों में दृष्टि बाधित छात्राओं की अपेक्षा समायोजन की क्षमता लगभग आधी है ।

तालिका - 2
श्रवण बाधित छात्र एवं छात्राओं में समायोजन स्तर

श्रवण बाधित विद्यार्थी न्यादर्श मध्यमान मानक विचलन टी-मान
छात्र 25 37.1015.10
0.43*
छात्राएं 25 38.6011.68

df = 48 *सार्थकता 0.05
के स्तर पर महत्वपूर्ण

विश्लेषण - तालिका 2 में 25 श्रवण बाधित छात्र तथा 25 श्रवण बाधित छात्राओं के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान को दर्शाया गया है । श्रवण बाधित छात्र व छात्राओं के मध्यमान क्रमशः 37.10 एवं 38.16 तथा मानक विचलन क्रमशः 15.10 एवं 11.68 गणना द्वारा प्राप्त किए गए हैं । इन दोनों के आधार पर गणना द्वारा टी-मान 0.43 प्राप्त हुआ है । 48 (df) स्वतंत्रता के अंश पर गणना द्वारा प्राप्त टी-मान 0.05 सार्थकता स्तर पर महत्वपूर्ण नहीं है । अतः निर्धारित परिकल्पना स्वीकृत की गई और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्रवण बाधित छात्र और श्रवण बाधित छात्राओं के मध्य समायोजन के संदर्भ में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है । इस संदर्भ में उपर्युक्त तालिका में दिए गए दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्यमानों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि श्रवण बाधित छात्रों का मध्यमान श्रवण बाधित छात्राओं के मध्यमान से अल्प मात्रा में कम है । मापनी की विवरणिका के अनुसार प्राप्तांकों में वृद्धि के साथ समायोजन की मात्रा में कमी होती है । इस आधार पर कहा जा

सकता है कि श्रवण बाधित से छात्रों में श्रवण बाधित छात्राओं की अपेक्षा समायोजन की मात्रा आंशिक रूप में अधिक है ।

तालिका - 3 दृष्टि बाधित एवं श्रवण बाधित विद्यार्थियों में समायोजन स्तर

विद्यार्थी	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान
दृष्टि बाधित विद्यार्थी	50	28.76	14.20	6.03*
श्रवण बाधित विद्यार्थी	50	37.85	13.41	

df = 98 *सार्थकता 0.05 के स्तर पर महत्वपूर्ण

विश्लेषण - तालिका 3 में 50 दृष्टि बाधित विद्यार्थियों तथा 50 श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान को दर्शाया गया है । दृष्टि बाधित व श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 28.76 एवं 37.85 तथा मानक विचलन क्रमशः 14.20 एवं 13.41 गणना द्वारा प्राप्त किए गए हैं । इन दोनों के आधार पर गणना द्वारा टी-मान 6.03 प्राप्त हुआ है । 98 (df) स्वतंत्रता के अंश पर गणना द्वारा प्राप्त टी-मान 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है । अतः निर्धारित परिकल्पना अस्वीकृत की गई और निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दृष्टि बाधित विद्यार्थियों और श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मध्य समायोजन के संदर्भ में सार्थक अंतर है । इस संदर्भ में उपर्युक्त तालिका में दिए गए दोनों समूहों के विद्यार्थियों के मध्यमानों का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि दृष्टि बाधित विद्यार्थियों का मध्यमान श्रवण बाधित विद्यार्थियों के मध्यमान से कम है । मापनी की विवरणिका के अनुसार प्राप्तांकों में वृद्धि के साथ समायोजन की मात्रा में कमी होती है । इस आधार पर कहा जा सकता है कि दृष्टि बाधित विद्यार्थियों में श्रवण बाधित विद्यार्थियों की अपेक्षा समायोजन की क्षमता अधिक है ।

निष्कर्ष

दृष्टि बाधित छात्राओं को दृष्टि बाधित छात्रों की तुलना में अधिक समायोजित पाया गया । इससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि लिंग दृष्टि बाधित विद्यार्थियों में समायोजन को प्रभावित करता है । श्रवण बाधित छात्र तथा श्रवण बाधित छात्राओं में समायोजन का स्तर लगभग समान है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लिंग श्रवण बाधित विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता को प्रभावित नहीं करता है । श्रवण बाधित विद्यार्थियों की तुलना में दृष्टिबाधित विद्यार्थी स्वयं को बेहतर तरीके से समायोजित कर लेते हैं । अतः निष्कर्ष में यह प्राप्त होता है कि दृष्टि बाधित विद्यार्थी बेहतर रूप से समायोजन कर लेते हैं । दृष्टिबाधित छात्राओं में, दृष्टिबाधित छात्रों की तुलना में आत्म अवधारणा अधिक उच्च स्तर की पाई जाती है जिसके परिणामस्वरूप निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लिंग दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में आत्म अवधारणा को प्रभावित करता है ।

सन्दर्भ

[1] आडवाणी, के। आर। (1965)। 7-21 वर्ष के आयु वर्ग के नेत्रहीन बच्चों की शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक समस्या। बॉम्बे विश्वविद्यालय, बॉम्बे को पीएचडी थीसिस प्रस्तुत की गई।

[2] आडवाणी, एल। (1981)। अंधे और दृष्टिहीन बच्चों के प्रकट व्यवहार का तुलनात्मक

अध्ययन। अनुसंधान मोनोग्राफ, श्रृंखला, देहरादून, नेत्रहीनों के लिए राष्ट्रीय संस्थान।
[3] आडवाणी, लाल (1992)। नेत्रहीन विकलांगों की शिक्षा में क्षितिज का विस्तार,, 20 जनवरी, पीपी। 15-16
[4] अग्रवाल, आर एंड कौर, जे (1985)। नेत्रहीन और श्रवण बाधित और उनके नियंत्रण, संज्ञानात्मक, सामाजिक और जीवनी चर, जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, वॉल्यूम के नियंत्रण के बीच संबंध। 119, पीपी 265-270।
[5] अग्रवाल, आर एंड कौर, जे (1988)। संवेदी हानि, मनोवैज्ञानिक अध्ययन, वॉल्यूम के साथ बच्चों के बीच तनाव और नकल का एक बहु प्रतिगमन विश्लेषण। 33, पी। 125
[6] अग्रवाल, आर एंड कूल, वी। के। (1990)। भारत में दृश्य विकृति वाले व्यक्तियों का मानसिक स्वास्थ्य, पुनर्वास अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 13, पीपी 83-86।
[7] अग्रवाल, आर एंड पिपलानी, आर (1989)। नेत्रहीनों के बीच अलगाव: कुछ महत्वपूर्ण भविष्यवक्ता। जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी, वॉल्यूम। 123, पीपी। 577-519
[8] अग्रवाल, आर एंड पोवार, आर (1981)। अंधों और देखे गए किशोरों के समायोजन में चिंता और उसकी भूमिका, विकलांग व्यक्तियों, देहरादून
[9] अग्रवाल, आर एंड कौर, एस (1985) पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया पेपर। नेत्रहीन और श्रवण के बीच चिंता और समायोजन का स्तर और नियंत्रण, संज्ञानात्मक, सामाजिक और जीवनी चर के नियंत्रण के लिए उनके संबंध। जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी, (गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर (भारत) मई, वॉल्यूम 119 (3), 265-269
[10] अग्रवाल, आर। (1976)। विभिन्न न्यूमेरिकल अनुक्रमों के एसटीएम रिकॉल का विकासात्मक अध्ययन, पीएचडी थीसिस (। मनोविज्ञान, बीएचयू)।
[11] अग्रवाल, आर। (1989)। दृष्टिहीनों के बीच तनाव और तनाव: सूचना पर सहसंबंध और प्रभाव, कल्याण मंत्रालय को सौंपी गई प्रक्रिया, नई दिल्ली।
[12] आहूजा, ए (1999)। उपलब्धि, आत्म अवधारणा और सीखने वाले विकलांग बच्चों के सामाजिक कौशल विकास पर व्यापक इंटरैक्शन रणनीतियाँ (सीआईएस) के प्रभाव का एक अध्ययन। पीएच.डी. शिक्षा, LASE, जामिया मिलिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, गाइड, डॉ। कुसुम शर्मा
[13] आलम, ए। एम। (2001)। शैक्षिक उपलब्धि, स्व-संकल्पना और श्रवण बाधित और सामान्य छात्रों के अलगाव का एक तुलनात्मक अध्ययन। पीएचडी एड। IASE, जामिया मिलिया इस्लामिया, विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।